नक़ाब

नकाबों के पीछे ही इंसान दिलचस्प होते हैं |
वर्ना सतहे-ख़ाल के नीचे तो वही हैवानी है ||

चश्में-नक़ाब रहने दे चेहरे पे हमेशा प्यारे |
बेनक़ाबी से ना जाने कहाँ गाज़ गिर जाये ||

हम दोनों ही वाकिफ़ हैं दरमियानी नकाबों के |
फिर भी क्यों कोशिश में हैं दिल फ़ुसलाने के ?

आदत सी हो चली है इन नकाबों में रेहने की |
अंधेरे में जागने की और उजियारे में सोने की ||

रंगीन चेहरा तो नज़्मों शायरी में खिलता है समीरा |
हकीक़ते नक़ाब के पीछे तो है वही स्याह चेहेरा ||

समीर खांडेकर

01.01.2015